जनवरी २०२४

अभिलाषा

नववर्ष संस्करण(२०२४)

हर सपना पूरा करने के लिए आत्म विश्वास होना जरूरी है,
और,
उस सपने को देखने के लिए हर युवा दिल मे एक अभिलाषा जरूरी है।

प्रतिष्ठाता संपादिका
अभिलिप्सा पाढ़ी

सह संपादिका
उत्कलिका राउत

अलंकरण - जूबून

संपादक की लेखनी से कुछ

अभिलाषा के सभी पाठकों और लेखकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। नया साल आपके जीवन में खुशियां भर दे । नए साल में आपकी हर मुराद पूरी हो। खुशियां आपका आंगन चूमे। यही मेरी ईश्वर के समीप कामना है। आशा है कि विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी आप "अभिलाषा" को भरपूर प्यार और हमें प्रेरणा देंगे।

।।धन्यवाद।।

उत्कलिका राउत

सहसंपादिका

सूचना

पत्रिका में लिखी गई सारि कविता और गल्प के लिए उसके लेखक लेखिका जिम्मेदार हैं।

पत्रिका में पाई गई व्याकरण गत त्रुटि के लिए संपादक और संपादिका क्ष्यमा प्रार्थी।

अनुक्रम

1 कविता विभाग

नया साल - रश्मिरेखा नंद ६
कर सकोगे क्या ? - स्वप्नराज परिजा ७
बसन्त आ गया - अक्षय मिश्रा ८
अच्छा लगता है - शिवेश हरसूदी ९
क्यों न करूँ..? - दृष्टि देसाई १०
उधार की हंसी - सुनीति साहू ११
मैं तुझसे दूर नही हूँ - ड़ः डी डी देसाई १२
नया कदम - रूमिता शर्मा "रोशनी" १३
नफरत - संतोष शिवाजी बामणे १४

2 कहानी विभाग

रेल की पटरी - दीपक सरंगी १६
कहानी एक लड़के की - एक अजनवी २२

2 निबंध विभाग

सफलता से सीख - बिरेंद्र जैन २६
डिजिटल युग: तकनीकी क्रांति का अध्याय - संजना चौधरी २७

Happy New Year

कविता विभाग

नया साल

नया साल आ रहा है
कुछ नया होने जा रहा है ।
बहुत कुछ पीछे छूट रहा है
एक नई उम्मीद दिल में जाग भी रही है ।
बहुत लोग बिछड़ गए हैं जरूर पर,
नए साल के साथ कुछ नए लोग जुड़ भी रहे हैं ।
कितनों से ठुकराहट मिली है ,
फिर भी ख़ुद को सम्भाला है ।
कोई दुर होने कि ख्वाहिशों में है तो,
कोई साथ देने का वादा कर रहा है ।
नया साल में कुछ नया करना है,
कुछ करके खुद को साबित करना है
कुछ प्रश्नो का जबाब देना है,
बस बातों से नहीं बल्कि करके भी दिखाना है ।
दिल में हमेशा एक तमन्ना है
सब खुस रहे - रब से बस यही दुआ है ।

रश्मिरेखा नंद
याजपुर

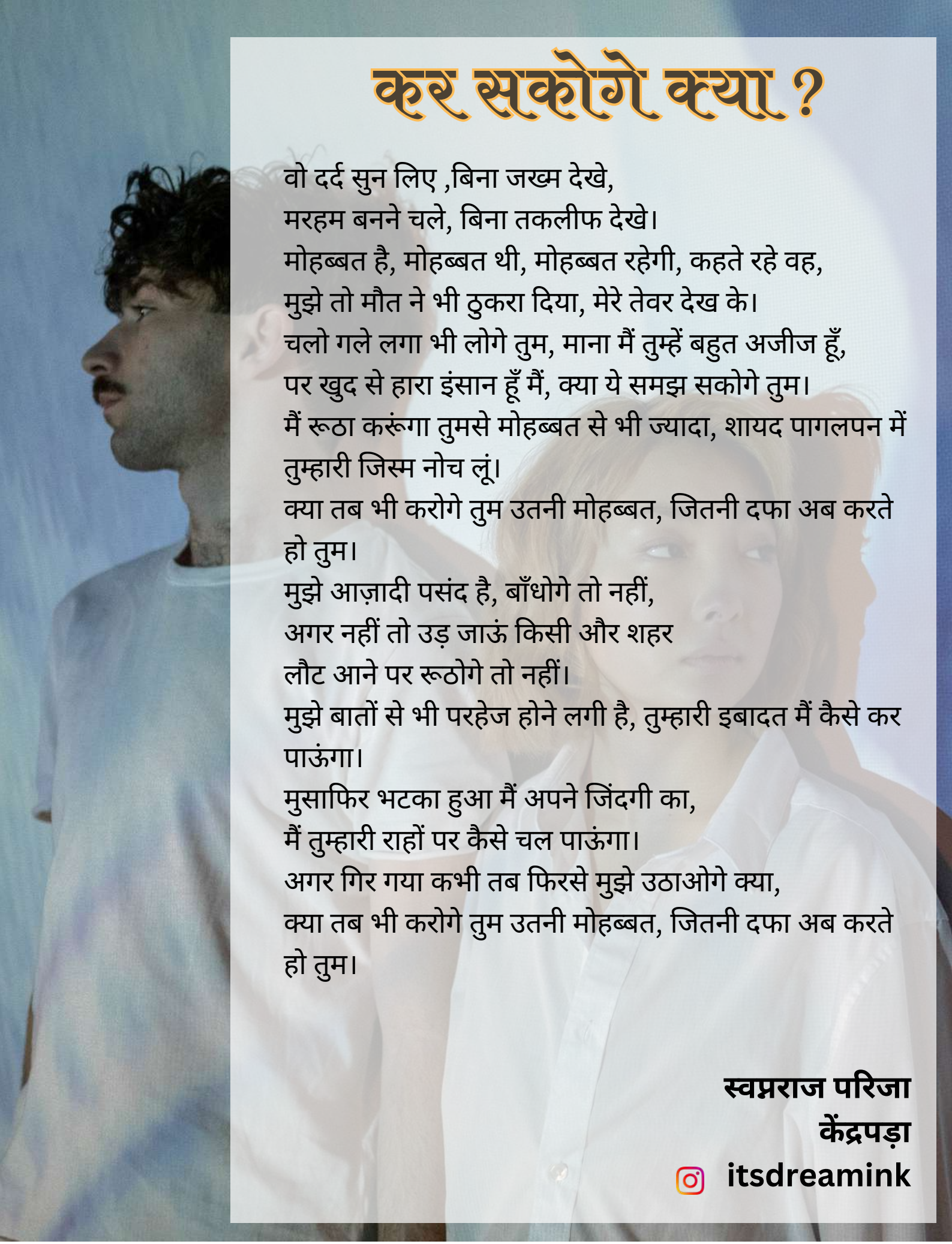

कर सकोगे क्या ?

वो दर्द सुन लिए ,बिना जख्म देखे,
मरहम बनने चले, बिना तकलीफ देखे।
मोहब्बत है, मोहब्बत थी, मोहब्बत रहेगी, कहते रहे वह,
मुझे तो मौत ने भी ठुकरा दिया, मेरे तेवर देख के।
चलो गले लगा भी लोगे तुम, माना मैं तुम्हें बहुत अजीज हूँ,
पर खुद से हारा इंसान हूँ मैं, क्या ये समझ सकोगे तुम।
मैं रूठा करूंगा तुमसे मोहब्बत से भी ज्यादा, शायद पागलपन में तुम्हारी जिस्म नोच लूं।
क्या तब भी करोगे तुम उतनी मोहब्बत, जितनी दफा अब करते हो तुम।
मुझे आज़ादी पसंद है, बाँधोगे तो नहीं,
अगर नहीं तो उड़ जाऊं किसी और शहर
लौट आने पर रूठोगे तो नहीं।
मुझे बातों से भी परहेज होने लगी है, तुम्हारी इबादत मैं कैसे कर पाऊंगा।
मुसाफिर भटका हुआ मैं अपने जिंदगी का,
मैं तुम्हारी राहों पर कैसे चल पाऊंगा।
अगर गिर गया कभी तब फिरसे मुझे उठाओगे क्या,
क्या तब भी करोगे तुम उतनी मोहब्बत, जितनी दफा अब करते हो तुम।

स्वप्नराज परिजा
केंद्रपड़ा
itsdreamink

बसन्त आ गया

बचपन की किल्लकारियो से, स्कूल के रास्तो
तक में आ गया।
ये नया कारवां शुरू ही किया मैनें कि फिर
बसन्त आ गया।
अभी तो माँ के आंचल से निकला था मै, कि
देखो ये जिम्मेदारियों का शोर आ गया,
हंसना सीखते सीखते, सबके दुखों को
समेटना आ गया।
कि देखो फिर ये बसन्त आ गया।

अक्षय मिश्रा
am_community_

अच्छा लगता है

घूमने निकल पड़ता हूँ अच्छा लगता है।
कभी अच्छा सोंचता हूँ अच्छा लगता है।
शनिवार की शाम छत पे बैठकर घंटो
बातें चाँद से करता हूँ अच्छा लगता है।
अपनी मेहनत और अपने दम पर ही
जब आगे बढ़ता हूँ अच्छा लगता है।
लोग दीवाने बन के लड़की पे मरते है
मैं महादेव पे मरता हूँ अच्छा लगता है।
जीवन मे मार्गदर्शन किताबे किया करती
अक्सर मैं बुक पढ़ता हूँ अच्छा लगता है।
सही राह चुन क्यो भटक जाते है लोग
जब सही राह चलता हूँ अच्छा लगता है।
अंधकार को जीवन से मिटाया है मैंने
दीप बन के जलता हूँ अच्छा लगता है।

शिवेश हरसूदी
खिरकिया जिला हरदा (म.प्र.)
shiveshagrawal89

क्यों न करूँ...?

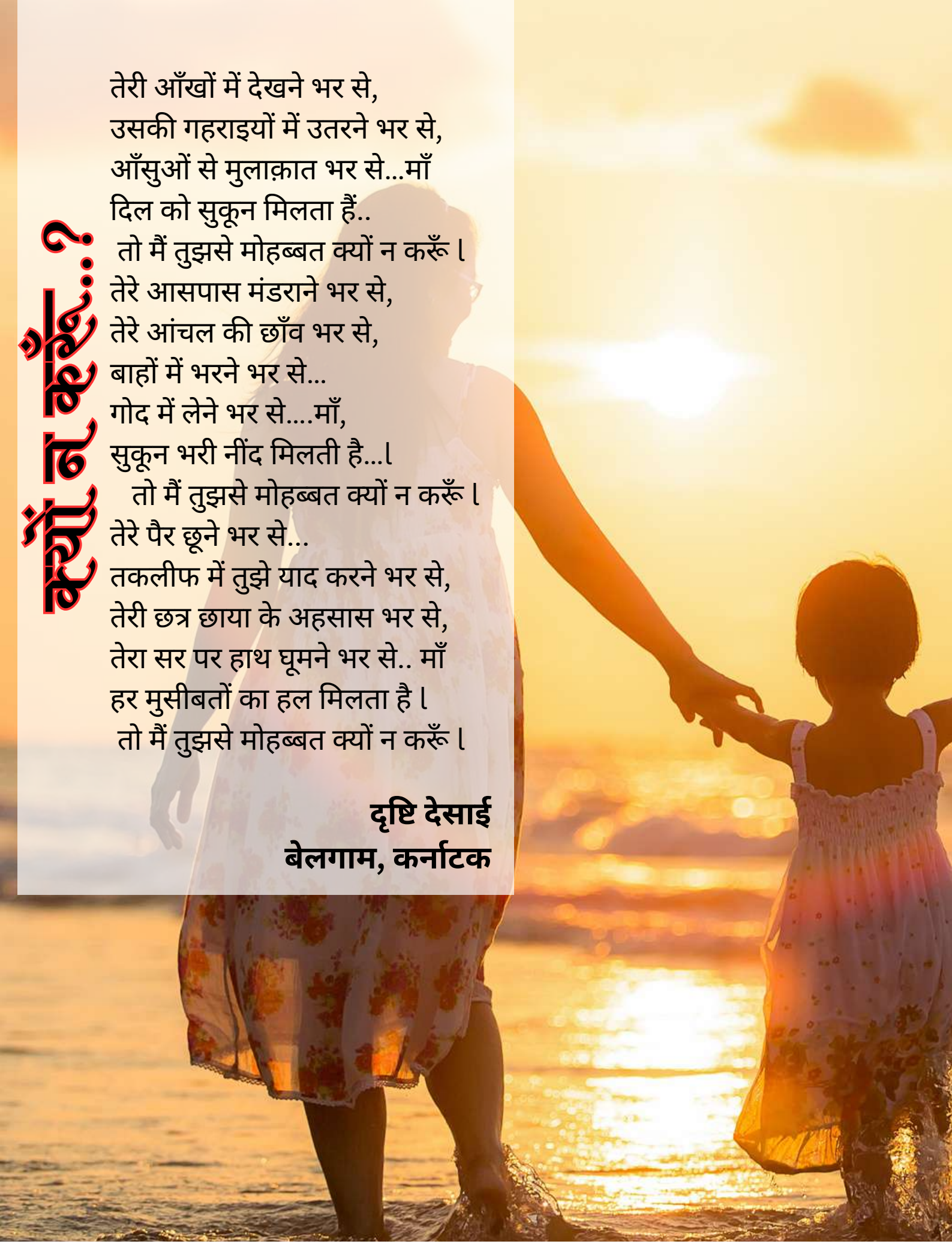

तेरी आँखों में देखने भर से,
उसकी गहराइयों में उतरने भर से,
आँसुओं से मुलाक़ात भर से...माँ
दिल को सुकून मिलता हैं..
तो मैं तुझसे मोहब्बत क्यों न करूँ ।
तेरे आसपास मंडराने भर से,
तेरे आंचल की छाँव भर से,
बाहों में भरने भर से...
गोद में लेने भर से....माँ,
सुकून भरी नींद मिलती है...।
तो मैं तुझसे मोहब्बत क्यों न करूँ ।
तेरे पैर छूने भर से...
तकलीफ में तुझे याद करने भर से,
तेरी छत्र छाया के अहसास भर से,
तेरा सर पर हाथ घूमने भर से.. माँ
हर मुसीबतों का हल मिलता है ।
तो मैं तुझसे मोहब्बत क्यों न करूँ ।

दृष्टि देसाई
बेलगाम, कर्नाटक

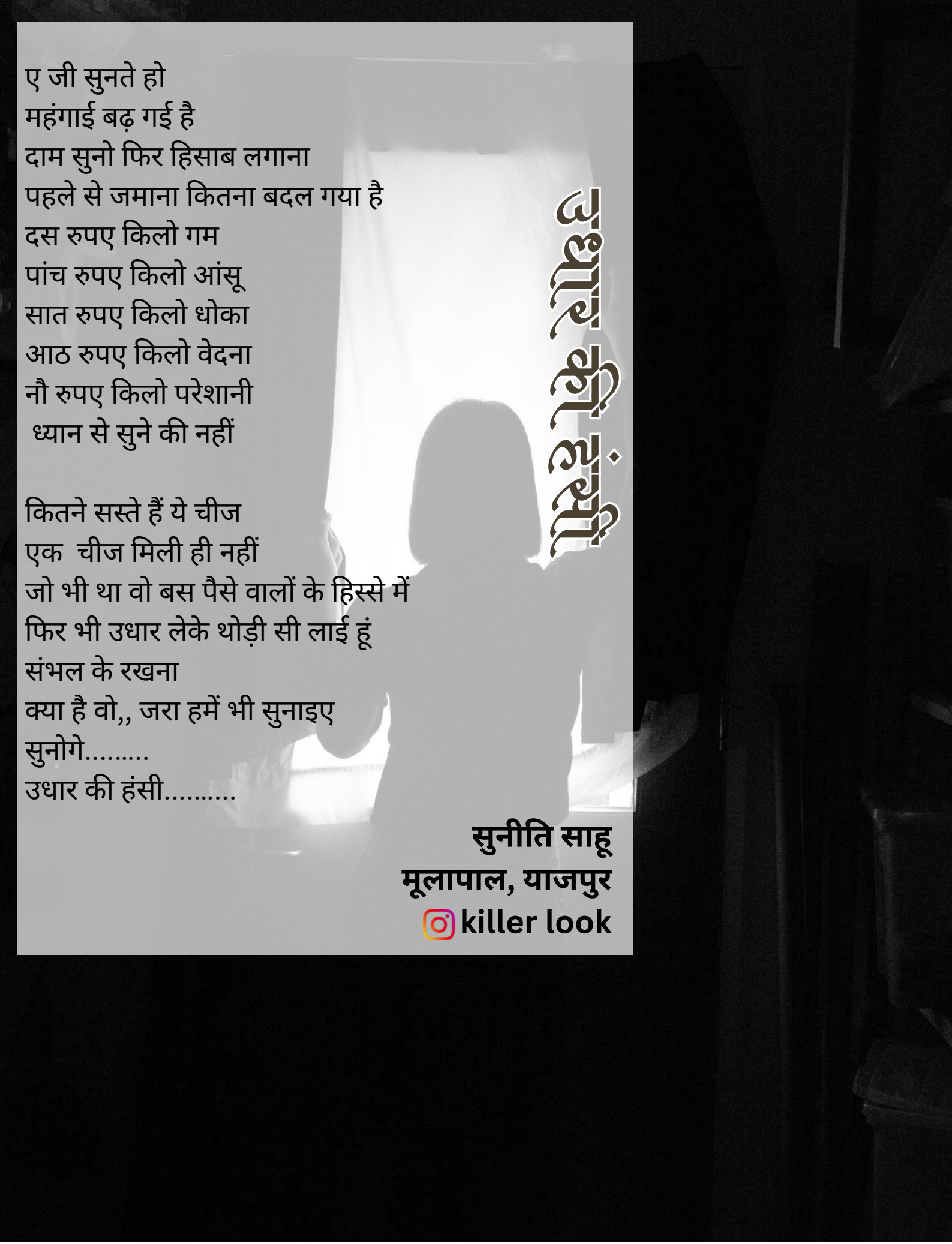

उधार की हंसी

ए जी सुनते हो
महंगाई बढ़ गई है
दाम सुनो फिर हिसाब लगाना
पहले से जमाना कितना बदल गया है
दस रुपए किलो गम
पांच रुपए किलो आंसू
सात रुपए किलो धोका
आठ रुपए किलो वेदना
नौ रुपए किलो परेशानी
ध्यान से सुने की नहीं

कितने सस्ते हैं ये चीज
एक चीज मिली ही नहीं
जो भी था वो बस पैसे वालों के हिस्से में
फिर भी उधार लेके थोड़ी सी लाई हूं
संभल के रखना
क्या है वो,, जरा हमें भी सुनाइए
सुनोगे.........
उधार की हंसी..........

सुनीति साहू
मूलापाल, याजपुर
killer look

मैं तुझसे दूर नहीं

देख आँखें बंद कर के.. मैं तुझसे दूर नहीं हूँ,
कर हाथ क्षितिज पार मिलूं.....मैं तुझसे दूर नहीं हूँ।
एक आंगन मेरा एक आंगन तेरा भी महक दोनों जगह हैं,
फैला दे बाहें महसूस कर हवा..... मैं तुझसे दूर नहीं हुँ।
उदास मैं इस गगन तले मायूसी में तेरा आसमान भी,
दिख रहा चाँद तुझे भी मुझे भी देख मैं तुझसे दूर नहीं हूँ।
यूँ तनहा अकेले में गुज़ारी नहीं जाती रैना मुझसे भी,
बदलती होगी करवटें तुम भी देख... मैं तुझसे दूर नहीं हूँ।
तेरी यादों को लगा गले जब भी मैं खुश होता हूँ,
मुस्कुराते है होंठ तेरे भी देख...मैं तुझसे दूर नहीं हूँ।
तुझ संग बिताये पलों को जब जी रहा होता हूँ फिरसे,
तुम सपने में मुझे ही पाती होगी देख मैं तुझसे दूर नहीं हूँ
जब दर्द का होगा मंजर तेरे दिल में कभी,
नम होती हैं पलकें मेरी भी देख.. मैं तुझसे दूर नहीं हूँ।

ड़: डी डी देसाई
डी पी एच पी एस ट्रेनिंग कालेज, हैदराबाद

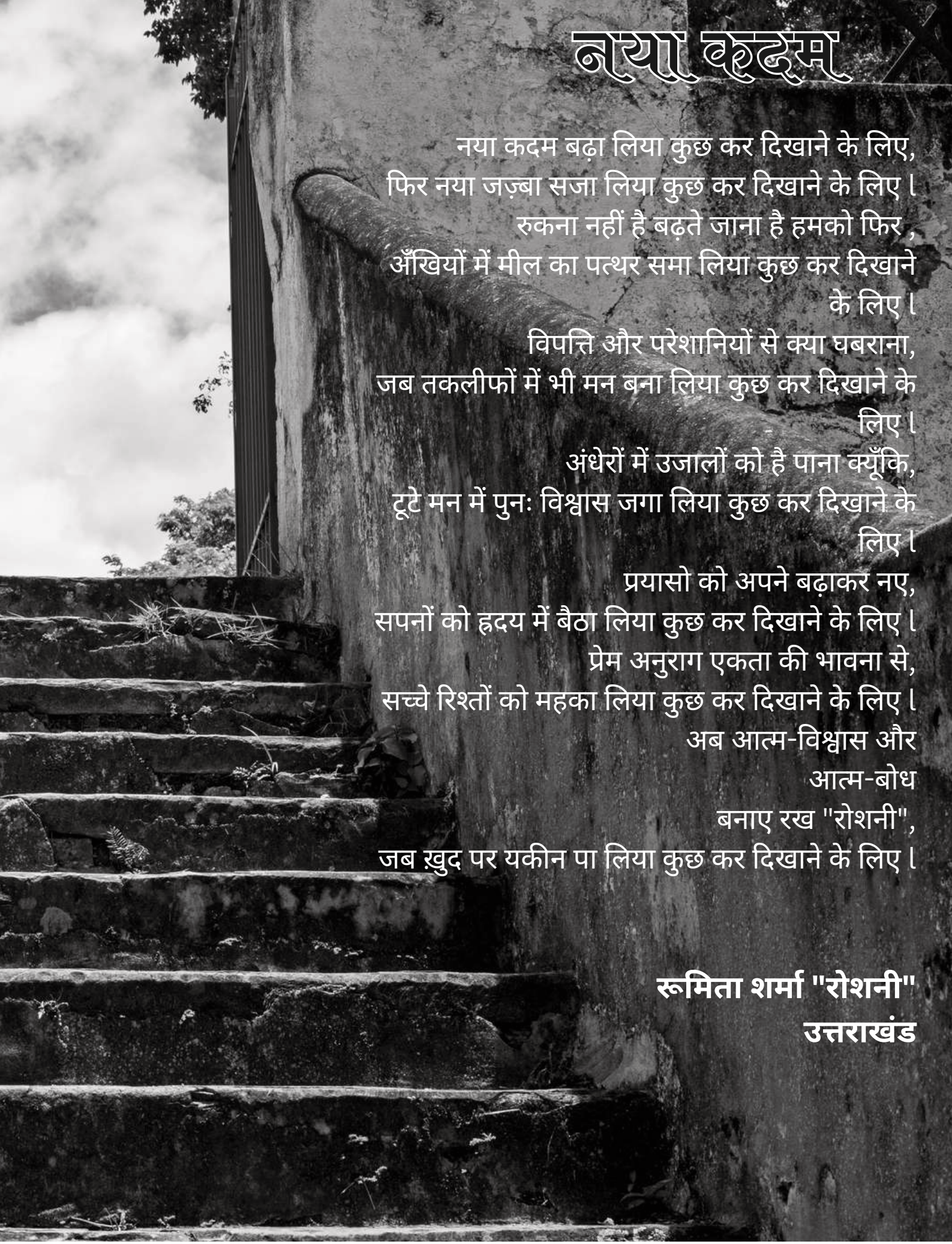

नया कदम

नया कदम बढ़ा लिया कुछ कर दिखाने के लिए,
फिर नया जज़्बा सजा लिया कुछ कर दिखाने के लिए।
रुकना नहीं है बढ़ते जाना है हमको फिर ,
अँखियों में मील का पत्थर समा लिया कुछ कर दिखाने के लिए।
विपत्ति और परेशानियों से क्या घबराना,
जब तकलीफों में भी मन बना लिया कुछ कर दिखाने के लिए।
अंधेरों में उजालों को है पाना क्यूँकि,
टूटे मन में पुनः विश्वास जगा लिया कुछ कर दिखाने के लिए।
प्रयासो को अपने बढ़ाकर नए,
सपनों को ह्रदय में बैठा लिया कुछ कर दिखाने के लिए।
प्रेम अनुराग एकता की भावना से,
सच्चे रिश्तों को महका लिया कुछ कर दिखाने के लिए।
अब आत्म-विश्वास और
आत्म-बोध
बनाए रख "रोशनी",
जब ख़ुद पर यकीन पा लिया कुछ कर दिखाने के लिए।

रूमिता शर्मा "रोशनी"
उत्तराखंड

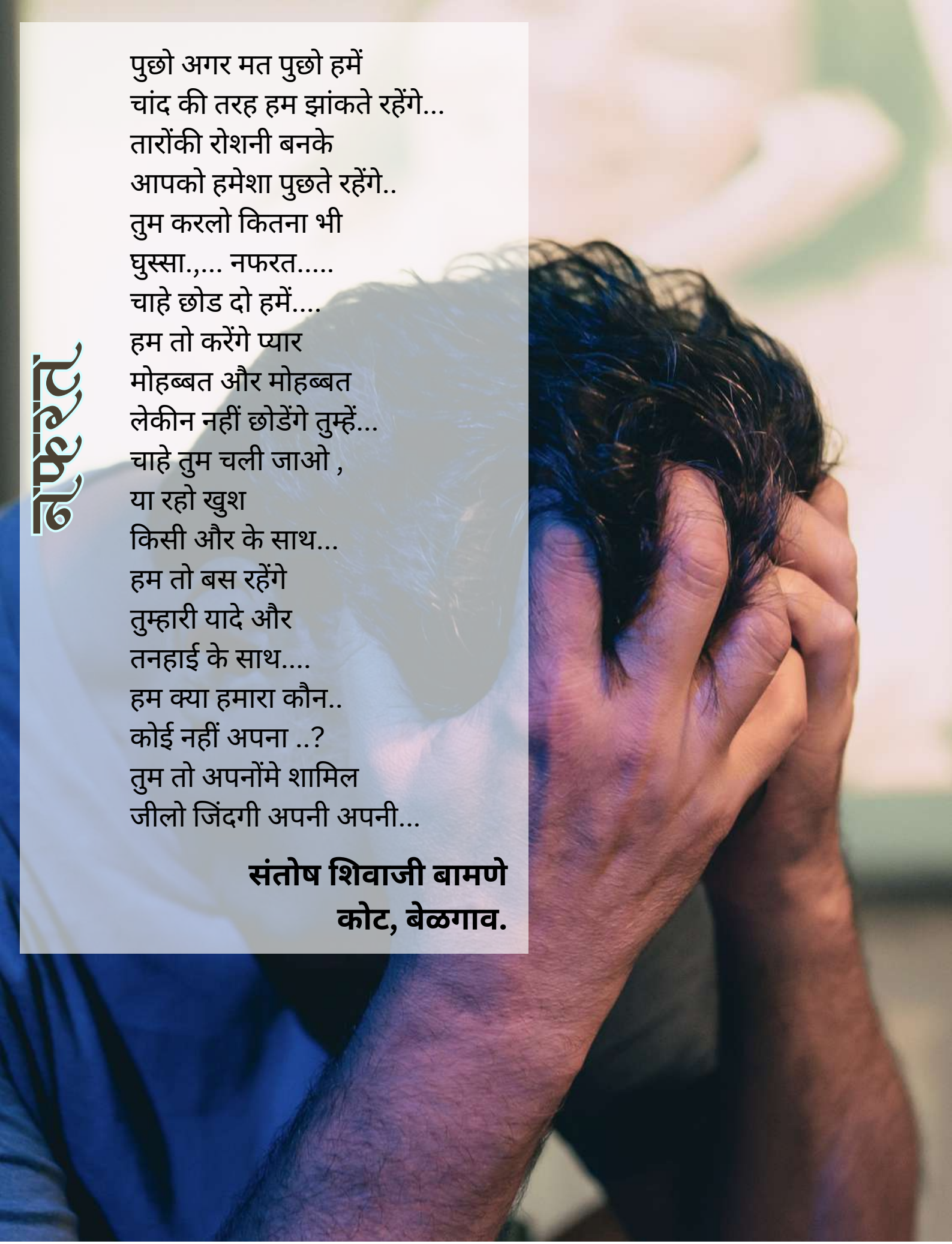

नफरत

पुछो अगर मत पुछो हमें
चांद की तरह हम झांकते रहेंगे...
तारोंकी रोशनी बनके
आपको हमेशा पुछते रहेंगे..
तुम करलो कितना भी
घुस्सा.,... नफरत.....
चाहे छोड दो हमें....
हम तो करेंगे प्यार
मोहब्बत और मोहब्बत
लेकीन नहीं छोडेंगे तुम्हें...
चाहे तुम चली जाओ ,
या रहो खुश
किसी और के साथ...
हम तो बस रहेंगे
तुम्हारी यादे और
तनहाई के साथ....
हम क्या हमारा कौन..
कोई नहीं अपना ..?
तुम तो अपनोंमे शामिल
जीलो जिंदगी अपनी अपनी...

संतोष शिवाजी बामणे
कोट, बेळगाव.

कहानी बिभाग

रेल की पटरी

दीपक सारंगी

ट्रेन में अपनी बर्थ पर बैठने के बाद काजल सामने की सीट पर बैठे व्यक्ति को देखकर चौंक गई । “रोहित यहाँ पर” !! रोहित अपने मोबाइल में व्यस्त था । उसने काजल की तरफ देखा ही नहीं। जैसे ही ट्रेन प्लेटफार्म छोड़कर चलने लगा, उसने अपना मोबाइल बंद कर दिया और काजल तरफ देख कर अपने इमोशन को अपने ऊपर काबू रख कर वह काजल से पूछा;
आप कैसे हैं?"
“ठीक हूँ” । ''संक्षिप्त उत्तर देने के बाद काजल ने अपने बैग से एक पत्रिका निकाली और उसे अपने चेहरे के सामने इस तरह रखा कि रोहित उसका चेहरा ठीक नहीं देख पाए।
काजल को अंदर ही अंदर असहजता महसूस हो रही थी।
काजल सोच रही थी अब क्या होगा? लगता है टी टी इ से अनुरोध करके अब उसकी सीट वहां से बदलवाना पड़ेगा। ट्रैन की खिड़की से काजल अब दूसरी ट्रैक्स को देख कर सोच रही थी की दो लोगों का जीवन भी रेल की दो पटरियों की तरह कभी-कभी समानांतर चलता है। जैसे उसने और रोहित ने भी एक-दूसरे का हाथ थाम कर सात जन्मों तक साथ रहने की कसम खाये थे; लेकिन उनकी शादीशुदा जिंदगी में तूफान आ गया; जिसके चलते अभी तलाक के लिए कोर्ट में केस चल रहा है । फैमिली कोर्ट ने उनके मामले की सुनवाई कर के अलग होने के फैसले को बदलने के लिए उन्हें छह महीने का समय दिया था। लेकिन एक बार तलाक का फैसला हो जाने के बाद कौन दोबारा साथ रहना चाहेगा?

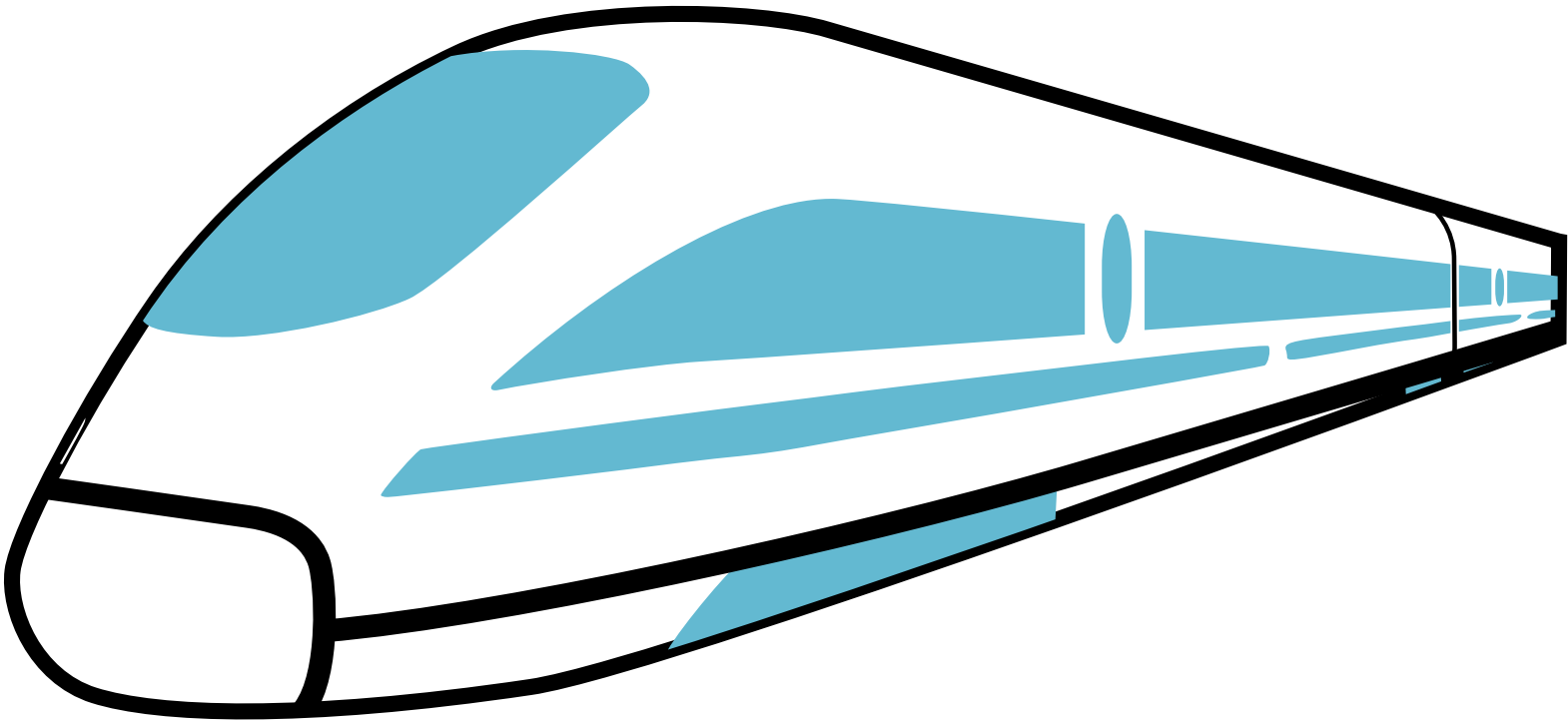

बह जाने वाला पानी, बंदूक निकली गोलियां निकलीं, क्या कभी कभी वापस आते हैं काजल अपने विवाहित जीवन से एक दम बोर हो गयी थी हालाँकि रोहित एक पति के रूप में सरल और प्यार करने वाला था, लेकिन वह एक बहुत पुराने किसम का आदमी था और बेहद ज़िद्दी आदमी था रोहित के लिए उसकी पत्नी की तुलना में उसके माता पिता अधिक महत्वपूर्ण थे । दूसरी तरफ काजल एक मोर्डर्न लड़की थी । वह शादी के बाद अपना खुद का एक सपनों का घर चाहती थी जिसको वह खुद अपने हाथों में सजाना चाहती थी। रोहित ने अपने पुराने पैतृक घर और अपने माता-पिता को छोड़कर काजल के साथ नए घर में शिफ्ट होने से साफ़ इनकार कर दिया था । इसीलिए दोनों के बीच खूब झगड़े हुए.

रोमा ने एक बार पूछा,

- “तुम्हारे लिए सबसे ज्यादा इम्पोर्टेंट कौन है”? मैं या तुम्हारे माता-पिता?”

रोहित ने डिप्लोमेटिक तरीके से उत्तर दिया

हर कोई मेरे लिए अनमोल है। सभी को लेकर हमारी दुनिया है।"

काजल को लगा कि वह कभी भी ऐसे आदमी के साथ अपनी बाकी जिंदगी नहीं बिता सकती जो अपनी पत्नी को प्राथमिकता नहीं देता ।

बस यही थी तलाक की बुनियाद ।

ये सब होने के बाबजूद, रोहित ने काजल को बहुत समझाया, उसके सामने गिड़गिड़या लेकिन काजल नहीं मानी । वह भी नौकरी करती है । स्वतंत्र महिला हैं । अगर वह चाहेगी तो, कई पुरुष उसका हाथ पकड़ने के लिए आगे आते हैं ; और वैसे भी रोहित किस अन्य लड़की से साथ शादी कर लेगा । वे समानांतर में चलेंगे ।

काजल की सास, ससुर, पिता और देवर ने भी काजल को बहुत समझाए । लेकिन काजल अपने फैसले पर अडिग थी । तलाक का फैसला कल होगा । आधिकारिक तौर पर दोनों हमेशा के लिए अलग हो जाएंगे ।

“काजल! चाय पियोगी?" रोहित ने कहा तो काजल भावुक अवस्था से वापस आई और उसने एक गहरी सांस ली ।

- नहीं।"

- कल से तुम जो चाहो कर सकती हो कल से तुम मेरे से आज़ाद हो जाओगी । भगवान की कृपा देखो उन्होंने आज हमें आखरी पल के लिए साथ ला दिए हैं । पति-पत्नी के रूप में यह हमारी आखिरी ट्रेन यात्रा है । तुमको तो ट्रैन जर्नी बहुत पसंद है ।

- तुम्हे याद है काजल जब हम अपने हनीमून के लिए ऊटी, कोडाईकैनाल गए थे, तो तुम खिड़की वाली सीट पर बैठी थी और कितने सारे बातें बोला करती थी तुम और मुझ पर नाराज हो जाती थी क्योंकि मैं एसी कोच में तुम्हरी बातों को अनसुना करके झप्पियाँ लिया

करता था? तुमको पता है काजल मेरी माँ न एक दम पगली है। आज जब में घर से रवाना हो रहा था वो भगवान के सामने दिया देकर प्रार्थना कर रही थी की भगवान उसकी पुकार सुनकर हम दोनों के तलाख के मामले को बंद करवा देंगे।
काजल ने धीमी आवाज़ में कहा,
“रोहित तुम कब तक ये बे बुनियाद रिश्ते को निभाओगे” ? बिल्कुल इस रेल की पटरी की तरह। साथ तो चलेंगे, लेकिन कभी मिलेंगे नहीं।
झट से रोहित ने कहा, " हम अलग होकर भी अच्छे दोस्त रहेंगे।
काजल ने घड़ी की ओर देखा, शाम के छह बज रहे थे। जैसे ही वह बाथरूम के लिए उठी, उसे याद आया कि उसकी माँ भी आज बिल्कुल वही बात बोल रही थी।
- “देख बेटी तलाख क्या इतनी ज़रूरी है ? रोहित एक अच्छा लड़का है। तुम दोनों फिर से एक साथ वापस आ जाओ।"
टीटी को देखकर काजल ने अपनी बर्थ बदलने का अनुरोध किया। टीटी ने उसका टिकट और हाथ में चार्ट देख कर कहा... ट्रेन फुल है, कोई सीट खाली नहीं है और तीन घंटे बाद आप अपनी मंजिल पर पहुंच जायेंगे और वैसे भी आपकी तो लोअर बर्थ है फिर दिक्कत किस बात की ?
मजबूरन काजल को अपनी बर्थ पर लौटना पड़ा।
रोहित ने फिर कहा,
- काजल, प्लीज, आज रात फिर से सोच लो। अगर तुम चाहती हो कि हम फिर से एक साथ हों...
काजल ने रोहित को रोका और भड़क कर बोल उठी
- आज रात क्या हो जाएगा...
तभी अचानक जोर का शोर हुआ, धुआँ, सरसराहट, भीड़ की चीख. ट्रेन का एक्सीडेंट हो गया था और कई सारे डिब्बे पलट गए थे। सिर में चोट लगने की वजह से काजल बेहोश हो गई थी। करंट न होने की वजह से चारों तरफ अंधेरा छा गया था। जब काजल को होश आया उसने अपने आप को अंधेरे में पाया। यात्रियों का सामान और अन्य सामान उसके ऊपर गिर गए थे और वह कमर से पैर तक सीट में दबी हुई थी। उसकी शरीर में तेज दर्द हो रहा था , चारों ओर होहल्ला की आवाज आ रही थी। काजल को लगा कि अगर वह कुछ देर और ऐसे ही पड़ी रही तो वह सायद मर जायेगी। कहाँ गया रोहित!! वह अपनी जान बचाकर भाग गया होगा सायद। वह मेरे बारे में क्यों सोचेगा?
- काजल! काजल! तुम कहाँ हो ? क्या तुम मुझे सुन सकती हो? मेरा हाथ पकड़ लो और इस खिड़की से बाहर निकल आओ। ट्रेन के एक्सीडेंट के वजह से हमारे कोच में भी आग

लग गई है। जल्दी से बाहर आ जाओ ।
रोहित मैं बाहर नहीं निकल पा रही हूँ ।"
काजल देख रही थी, रोहित खिड़की से बग्गी में आया, उसके ऊपर गिरी हुई विभिन्न चीजों को हटाया और लगभग बीस मिनट के बाद उसे सीट से बाहर निकाला, अपने दोनों हाथों को खिड़की की ओर झुकाते हुए, काजल ने देखि कुछ खून से लथपथ बेजान शरीर को । वह अपना दाहिना पैर नहीं रख नहीं पा रही थी । अपनी सारी ताकत बचाकर, उसने खिड़की को पकड़ लिया । रोहित ने बग्गी के ऊपर ऊपर चढ़ने के लिए अपनी ताकत का इस्तेमाल किया । अंत में, रोहित ने अपने बगल की खिड़की से रोमा को बग्गी से बाहर खींच लिया ।
बग्गी के ऊपर पर बैठने के बाद काजल को लगा कि उसका पुनर्जन्म हुआ है । अन्य लोगों की मदद से काजल बग्गी से नीचे उतरी और रेल पटरी पर बैठ गई । अपने कोच और बगल के कोच में आग तेज होने पर सभी लोग भागने लगे । रोहित ने चिंतित होकर कहा,
-काजल! चलो जल्दी चलें, हमारा स्टेशन ज्यादा दूर नहीं है । वहां पर पहुँच जाने से, अस्पताल जाने में सुविधा होगी।" काजल चल नहीं पा रही थी । काजल ने रोते हुए कहा,
- मैं खड़ी नहीं हो पा रहा हूँ रोहित । शायद मेरी पीठ और पैर में बहुत जोरों से चोट लगी है।"
रोहित अपने दोनों हाथों से काजल को उठा के आगे बढ़ने लगा । काजल अँधेरे में रोहित को देख रही थी । रोहित का माथा, गाल और हाथ से काफी खून बह रहा था । वह सोच रही थी रोहित क्यों अपनी मुशकिलों को भूलकर उसकी जान बचा रहा है ? क्यों
ये आदमी को वह हमेशा के लिए कल छोड़ देगी । फिर भी.....
काजल की आँखें नम हो रही थीं ।
जब होस आया तो उसने खुद को एम्बुलेंस के अंदर पाया । रोहित उसके बगल में बैठा था । रोहित अपने फोन पर दोनों घरों के लोगों को बता रहा था कि वे सुरक्षित हैं ।
भगवन का लाख सुक्रिया तुमको होश आ गया । मैं डर गया था।"
तमाम कठिनाइयों के बावजूद काजल के चेहरे पर मुस्कान थी । उसने धीमी आवाज में कहा,
"अपनी पट्टियाँ करवा लो "
अस्पताल में काजल के पैर पर प्लास्टर किया गया और रोहित के घाव पर टांके लगाए गए और पट्टी बांधी गई । दोनों एक ही कमरे में रुके थे । उस रात दोनों के माता पिता अस्पताल पहुंचे । हर कोई भगवान का शुक्रिया अदा कर रहा था कि दोनों बच्चे सुरक्षित हैं।
अगली सुबह रोहित की माँ बोल रहे थे ,
- इस्वर की कृपा से दोनों फिर से एक हो गए

अभी वह तलाख का केस को उठा दो आज तो फाइनल डेट था अ"
तभी काजल की माँ ने बोली ,
-आप ने एक दम सही बोली है समधन जी । आजकल के बच्चे चोट खाने पर ही सीखते हैं ।
काजल बच गई क्योंकि जमाई बाबू जो उसके साथ थे ।
रोहित ने धीमी आवाज में कहा...
- मैंने केवल मानवता के नाते अपना कर्तव्य निभाया है । हो सकता है कि मेरी जगह काजल को और कौन भी बचा सकता था । काजल ने अलग होने और अपनी जिंदगी खुद जीने का फैसला किया है। हम दोनों की जिंदगी रेल लाइनों की तरह समानांतर है। क्या कभी दो रेलवे अवधारणाएं जुड़ती हैं ? मैंने वकील को बुलाया है । मैं एक अलग तारीख के लिए उसे कहूंगा । काजल को इस मामले में कोई फ़ोर्स नहीं करेगा । हो सकता है काजल मुझे छोड़ के किसी और के साथ ज्यादा खुश रहेगी
रोहित के पिता ने गंभीर स्वर में कहा,
- ये दोनों बेवकूफ बच्चे हैं । तुम लोगों को दुनियादारी के बारे में कितना ज्ञान है? रेलवे ट्रैक की दो लोहे की अवधारणा पर ट्रेन के दो पहिये रहते हैं और यह संतुलन के साथ चलती है । वैवाहिक जीवन भी एक सीधी रेलगाड़ी की तरह है, और पति-पत्नी दोतरफा रेलवे अवधारणाएँ हैं । अपने अंदर के गुस्से, क्रोध, अभिमान को भूलकर सावधानी से जीवन की गाड़ी को आगे बढ़ाना है । क्रोध अहंकार घरेलु झगड़ें मन का ना मिलना आदि आज की ट्रेन दुर्घटना की तरह ही परिवार की दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं और लाइन को पटरी से उतार देते हैं ।
काजल के पिता ने अपनी बेटी का सिर के ऊपर हाथ रख कर बोले
काजल बेटा! सबको साथ लेकर चलने से ही घर, परिवार बनता है । यह सोचना सही नहीं है कि हम अकेले रह सकते हैं क्योंकि हम नौकरी करते हैं । रेलवे की अवधारणा को देखें तो यह हमेशा समानांतर होती है, लेकिन बीच में लूप लाइन दोनों अवधारणाओं को जोड़ती है, ट्रेन अपनी दिशा बदल लेती है । समझौता जीवन की लूप लाइन है । तलाक कोई समाधान नहीं है, लेकिन यह जरूरी है कि तुम दोनों इस फैसले पर दोबारा विचार करो । यह दुर्घटना तुम लोगों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में आया है।
रोहित के पिता ने कहा,
"तुम घर लौट आओ बेटी, हम दोनों अपने गाँव चले जायेंगे।"
काजल ने रोते हुए कहा,
- मुझे अब और शर्मिंदा मत करिये , पिताजी । भगवान ने मुझे मेरी गलतियों का सजा दिया है । अब हम सब एक साथ रहेंगे । आप की इस नादान बेटी को क्या आप माफ़ी नहीं देंगे।

सभी खुश हुए और अपनी आँखें पोंछ लीं ।
डॉक्टर और नर्स कमरे में आए और बाकी सभी को बाहर जाने के लिए कहा। चेक-अप के बाद काजल ने रोहित का हाथ पकड़ते हुए कहा,
- “क्या तुम मुझे माफ नहीं करोगे? तुमने मुझे क्यों बचाया?”
कैसे तुमने अपनी जान को जोखिम में डालकर मुझे अंधेरे से बाहर निकाला और ही-मैन की तरह मुझे अपनी बाहों में ले लिया?"
रोहित ने मुस्कुराते हुए कहा,
- “जब तक हम पति-पत्नी हैं, पत्नी की सुरक्षा करना मेरी जिम्मेदारी और कर्तव्य है। और हां, कभी-कभी कई दुर्घटना जीवन की दिशा बदल देती है, समानांतर से असममित तक, एक जोड़े को एक साथ लाने के लिए, एक सुखद अंत ।"
कल रात की रेल दुर्घटना सचमुच काजल को एक बुरे सपने जैसी लग रही थी और वह पति की गोद में सिर रखकर भविष्य के कई सुनहरे सपने देख रही थी ।

सहकारी अध्यापक
रोलैंड फार्मेसी कॉलेज, ब्रह्मपुर, ओडिशा

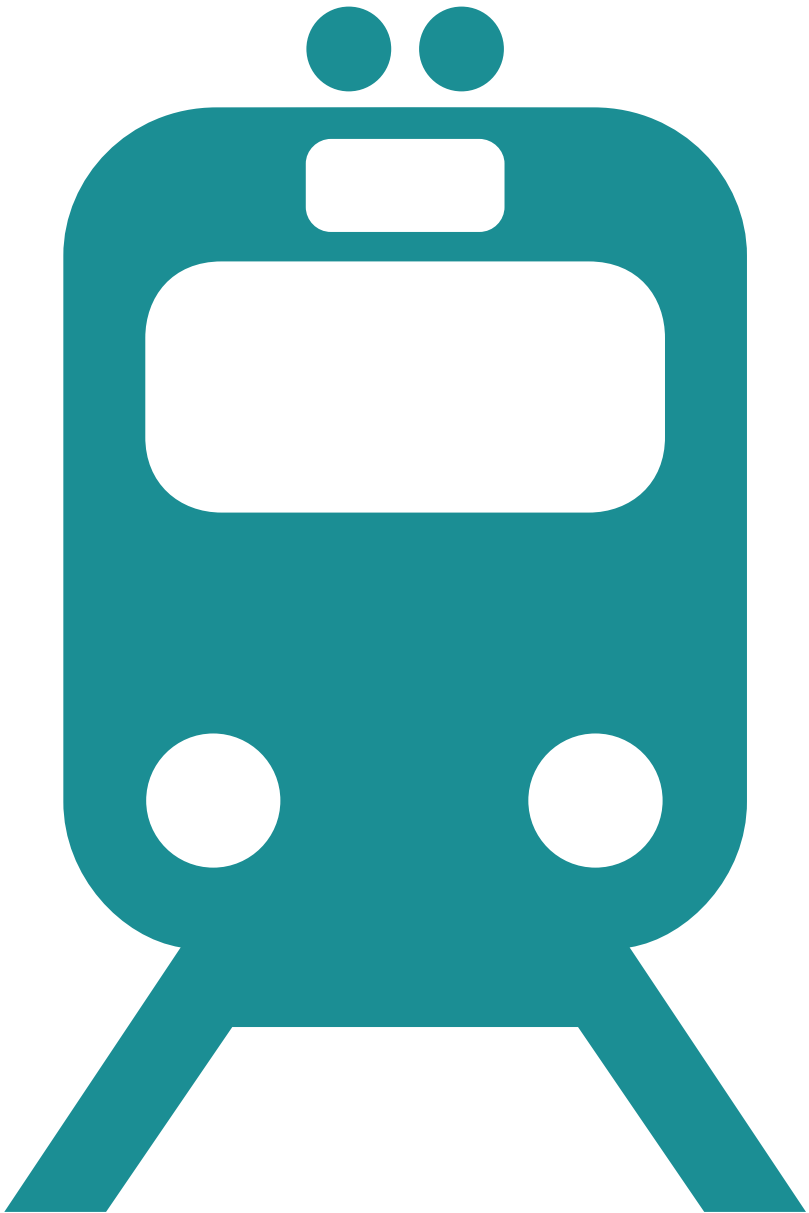

कहानी एक लड़के की

धाराबाहिक उपन्यास

हर इंसान की कहानी में कुछ किरदार होते हैं, पर हर एक इंसान को ये लगता है कि उसकी कहानी का हीरो वही है और बाकी सभी विलेन या साइड कैरेक्टर है।

1998 दोपहर 3 बजे का समय था सूरज इतना रोशन था कि गर्मी से ना जाने कितने लोग मर रहे थे, एक चाय वाली अपनी दुकान में उस तेज धूप में सूरज को कोसते हुए बोल रही थी "हे भगवान, क्यों हमारी जान ले रहे हो इतनी गर्मी से तो इंसान मर ही जाएगा"

पर उसे क्या ही पता था कि इस संसार में अब से ठीक 2 घंटे बाद ऐसा तूफ़ान आने वाला है कि उसकी दुकान के साथ - साथ ना जाने कितने लोगों की जिन्दगी बर्बाद हो जाएगी। उस चाय की टपरी के ठीक 150 मीटर दूर एक हॉस्पिटल था, उसमें एक औरत जोर - जोर से चीखती - चिल्लाती जा रही थी, ऐसे रो रही थी मानो जैसे वह दर्द से मर जाएगी। पास बस उसका पति और कोई नहीं... औरत चिल्लाते - चिल्लाते अपने पति से

औरत - सुनो, मनीष, चाहे कुछ भी हो जाए, मुझे और मेरे बच्चे को कुछ मत होने देना

मनीष - जसोदा, कुछ नहीं होगा तुम्हें, नहीं जी हमारे बच्चे को। डॉक्टर, डॉक्टर, जल्दी कुछ करिए...

डॉक्टर - इनकी हालत बहुत क्रिटिकल है, ऑपरेशन करके बच्चे को निकालना पड़ेगा।

मनीष - हाँ तो करिए ना, फीस तो डिपॉजिट कर दी थी मैंने।

डॉक्टर - एक प्रॉब्लम है, माँ की जान को थोड़ा खतरा हो सकता है ऑपरेशन से...

मनीष - डॉक्टर, कुछ तो तरीक़ा होगा

डॉक्टर - नहीं, पर हम पूरी कोशिश करेंगे...

मनीष - पर डॉक्टर...

मनीष - पर डॉक्टर...
इतने में जसोदा दर्द से कराहती हुई बोलती है
जसोदा - डॉक्टर, मैं तैयार हूँ पर मेरे बच्चे को बचा लेना।
डॉक्टर - और देरी नहीं कर सकते, अभी... नर्स, नर्स, जल्दी इन्हें ओटी के अंदर लेकर आओ
नर्स - जी, डॉक्टर।
ये बोल कर नर्स ने जसोदा को ओटी के अंदर लेकर जा रहे थे और फटाफट ऑपरेशन की तैयारी करने लगे। सर्जिकल लाइट्स की रोशनी से जसोदा को बस डॉक्टरों की आवाजें सुनाई दे रही थीं जो धीरे - धीरे कहीं
डॉक्टर - ठीक है, नर्स, उसे लाइडोकेन 2% दो, और कैथीटर डालो।
नर्स - हो गया, सर।
डॉक्टर - वर्टिकल इंसीजन के लिए जा रहा हूँ।
और इतना कहकर जैसे ही डॉक्टर ने कट लगाया, अचानक लाइट ऑफ... ओटी में चारों और अंधेरा।
डॉक्टर - अरे, लाइट कहां गई, मैंने इंसीजन कर चुका हूँ, कॉम्प्लिकेटेड केस है, जल्दी कोई डीजी चालू करवाओ। (ये बोलते हुए डॉक्टर ओटी से बाहर आ गए)
उनको ओटी के बाहर देख, मानस हड़बड़ा गया
मानस - डॉक्टर, क्या हुआ ?
डॉक्टर - अरे बिजली चली गई है और डीजी भी चालू नहीं हो रहा, ऑपरेशन आधा हुआ पड़ा है।

इतना सुनते ही मानस बिना देरी किए डीजी रूम की तरफ भागा। वहां पहुचकर देखता है कि दो आदमी आराम से बैठ कर बीड़ी फूंक रहे हैं। जब उनको पूछा कि डीजी क्यों नहीं चल रहा,
उनमें से एक आदमी उनके और एक अजीब सी नजर से देख कर बोला, पेट्रोल खत्म हो गया है, लेने भेजा है लेकर आ रहा होगा।
मानस - कितना टाइम लगेगा ?
आदमी - इतना मगजमारी मत कर, अगर इतनी ही तकलीफ है तो खुद लेकर आजा।

उधर डॉक्टर कैसे भी करके टॉर्च लगा कर ऑपरेशन फिर से स्टार्ट करने ही वाले होते हैं कि इतने में हवा का एक जोरदार झोंका आता है और उनका सारा सामान बिखरा देता है।
चायवाली चिल्लाती है अरे ये क्या कयामत हो रही है!
मानस पीछे घूमा और चायवाली को देख हॉस्पिटल की तरफ बढ़ गया, पेट्रोल डालने वाला होता है कि चारों और के मंदिरों से हरि बोल और घंटी मृदंग की आवाजें आने लगीं।

और कम्पाउंडर ने आकर मानस को बताया कि "आप यहाँ हैं, आपको लड़का हुआ है, जल्दी जाइए, डॉक्टर बुला रहे हैं।
मानस भाग कर जाता है और वह देखता हैं कि डॉक्टर मुस्कुरा कर बोलते हैं, मुबारक हो, लड़का हुआ है, माँ बेटे दोनों सेफ हैं।
और सबसे गजब यह है कि इसके शोर से ही बिजली डर कर आई।
वहां बैठी एक बुजुर्ग औरत ने मानस की ओर देखा और बोली... "बेटा, ये तो सब आबाद करेगा या सब बर्बाद...". ये सुनकर मानस थोड़ा बेचैनी भरी नजरों से उस औरत की ओर देखने लगा।
बुजुर्ग औरत - इसका पैदा होना कुछ तो इशारा दे रहा है... यहां बैठे हर एक आदमी और के सक़ल पर देख, तेरे कुछ लगते हैं क्या ये लोग... पर देख, इसके पैदा होने की कितनी ज्यादा खुशी है इनको...
बादलों को साथ लिए पैदा हुआ वह
मंदिरों से गूंजे हरिओम शब्द से
या तो रखेगा नाम ये कर ऊँचा तेरा
या मिला देगा इस जमीन को मिट्टी में...
कई सवाल उठे तब मानस के मन में
क्या ये औरत की बातें सच हैं ? क्या ये सच में कोई चमत्कार हो रहा था या बस एक इत्तेफाक था!!!

(क्रमशः)

एक अजनवी

निबन्ध बिभाग

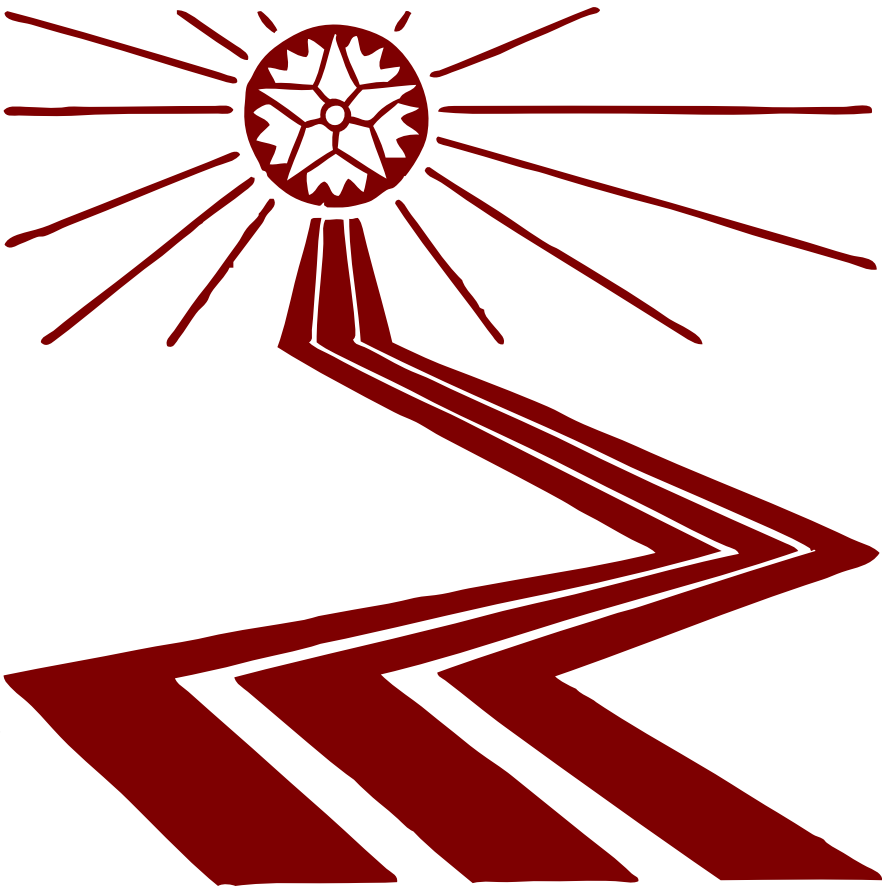

सफलता से सीख

बिरेंद्र जैन

"सफलता सार्वजनिक उत्सव होती है किंतु असफलता व्यक्तिगत शोक है।" प्रत्येक इंसान जीवन में कभी ना कभी असफल अवश्य होता है और जो लोग कभी असफल नहीं होते इसका अर्थ है कि वह कुछ साहसी कर ही नहीं रहे। जो लोग जीवन में सफल होते हैं वे अपने निर्णयों का समय समय पर मूल्यांकन अवश्य करते हैं और उनके आधार पर अपनी असफलताओं से सीख लेकर भविष्य के निर्णयों की आधारशिला रखते हैं।

हमें अपनी असफलताओं का निष्पक्ष होकर अवलोकन करना चाहिए एवम् हम अपने लक्ष्य से किस मोड़ पर भटक गए इसकी खोज करनी चाहिए, साथ ही हमें यह भी विचार करना चाहिए कि हम कौनसा दूसरा निर्णय ले सकते थे और भविष्य में हम किस तरह उस पर अमल कर सकते हैं।

असफलताओं के अनुभव से मिली सीख ही सफलता का मूलमंत्र होती है।

नागपुर

am_community_

डिजिटल युग: तकनीकी क्रांति का अध्याय

संजना चौधरी

डिजिटल युग प्रौद्योगिकी की कहानी में एक बहुत ही रोमांचक अध्याय की तरह है। यह तब हुआ जब सब कुछ वास्तव में तेजी से बदलना शुरू हुआ और कंप्यूटर हमारे जीवन का एक बड़ा हिस्सा बन गया।

इसे सरल शब्दों में कहें तो, एक प्रस्तावना एक किताब के पहले पन्ने की तरह होती है जो आपको कहानी पढ़ना शुरू करने से पहले उसके बारे में थोड़ी सी जानकारी देती है।

हमारे समय में, हम एक नए समय में आगे बढ़ रहे हैं जिसे डिजिटल युग कहा जाता है। इसका मतलब यह है कि प्रौद्योगिकी हमारे देश में रहने, काम करने, सीखने और चलाने के तरीके को बदल रही है। यह एक बड़े बदलाव की तरह है जो हर चीज़ को प्रभावित करता है।

डिजिटल युग में कंप्यूटर, स्मार्टफोन और इंटरनेट जैसी चीजें शामिल हैं। ये चीजें हमें बहुत सी अच्छी चीजें करने में मदद करती हैं, जैसे गेम खेलना, अपने दोस्तों से बात करना और जानकारी ढूंढना। वे हमें नई चीज़ें सीखने और आनंद लेने में भी मदद कर सकते हैं।

डिजिटल युग ने लोगों के लिए एक-दूसरे से बात करना बहुत आसान बना दिया है। अब हम वास्तव में तेज़ी से संदेश भेज सकते हैं, जिससे हमें अधिक लोगों के साथ समाचार, विचार और ज्ञान साझा करने में मदद मिलती है।

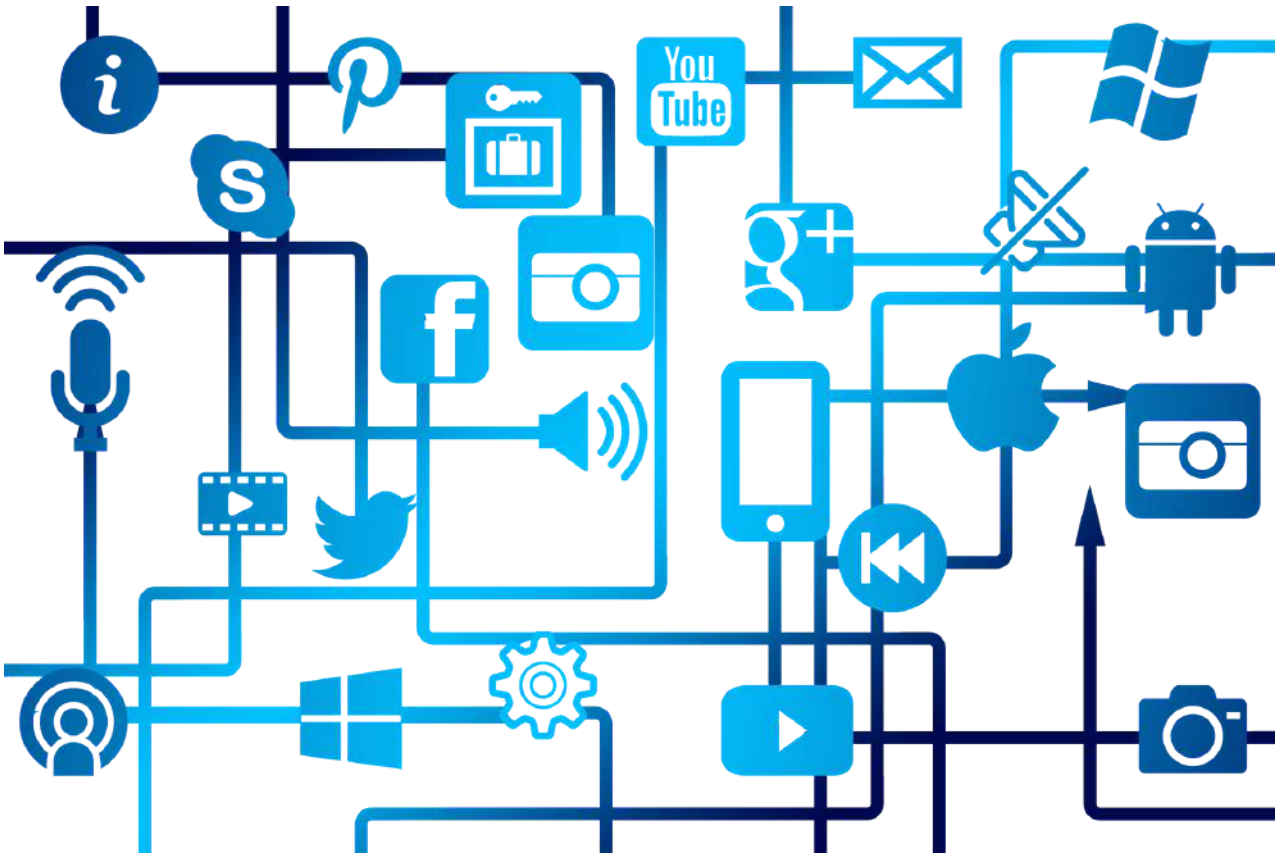

डिजिटल फाइनेंस ने धन सहायता प्राप्त करना आसान और सुरक्षित बना दिया है। अब आप बैंकिंग, चीज़ों का भुगतान और निवेश जैसे काम करने के लिए इंटरनेट का उपयोग कर सकते हैं, जो हमारी धन प्रणाली को बेहतर बनाने में मदद करता है।

शिक्षा में अनुकूलन का मतलब है कि छात्र अब सीखने के लिए नए और मज़ेदार उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं। वे वीडियो देख सकते हैं, ऑनलाइन सहायता प्राप्त कर सकते हैं और नई चीज़ें तलाशने और सीखने के लिए अच्छे ऐप्स का उपयोग कर सकते हैं। ऐसा लगता है जैसे शिक्षा अब और भी अधिक रोमांचक और अलग हो गई है।

नए आईटी उत्पादों और सेवाओं के निर्माण ने लोगों को अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने के नए मौके दिए हैं। ऑनलाइन बाज़ारों ने लोगों के लिए उद्यमी बनना आसान बना दिया है और अर्थव्यवस्था को बढ़ने में मदद की है।

चुनौतियाँ ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें करना कठिन या पेचीदा है, लेकिन वे हमें सीखने और बढ़ने का मौका भी दे सकती हैं। अवसर हमारे लिए कुछ अच्छा या रोमांचक करने के अवसर हैं।

हालाँकि नई तकनीक के साथ कुछ कठिन चीज़ें भी आती हैं, लेकिन यह बहुत सारी अच्छी चीज़ें भी लाती है। अगर हम इसका अच्छे तरीके से उपयोग करें तो हम कई बड़े काम कर सकते हैं और अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं।

समाप्ति का अर्थ है किसी चीज़ को पूरी तरह से रोकना या समाप्त करना।

डिजिटल युग ने हमें काम करने के नए उपकरण और तरीके दिए हैं, और यह हमें यह कल्पना करने में मदद कर रहा है कि भविष्य कैसा हो सकता है।

sanjana.choudhury_

23
20
24